Ancient Vedic Mantras and Rituals

VEDIC PRAYERS

Krishna Janmashtami 2026: जानें तारीख, शुभ मुहूर्त, महत्व और कैसे मनाएं जन्माष्टमी | PDF

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी 2026 हिंदू धर्म के प्रमुख त्योहारों में से एक है। यह पर्व भगवान विष्णु के आठवें अवतार **भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव** के रूप में मनाया जाता है। हर साल भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को जन्माष्टमी मनाई जाती है। इस दिन भक्त भगवान श्रीकृष्ण की पूजा-अर्चना, व्रत, भजन-कीर्तन और मध्यरात्रि में जन्मोत्सव मनाते हैं।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी 2026 कब है?

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी 2026 में 4 सितंबर, शुक्रवार को मनाई जाएगी। पंचांग के अनुसार अष्टमी तिथि 4 सितंबर 2026 को तड़के लगभग 2:25 बजे शुरू होकर 5 सितंबर की रात लगभग 12:13 बजे समाप्त होगी।

भगवान श्रीकृष्ण का जन्म मध्यरात्रि में हुआ था, इसलिए जन्माष्टमी की पूजा और जन्मोत्सव रात के समय किया जाता है। स्थान के अनुसार निशीथ पूजा के समय में कुछ मिनटों का अंतर हो सकता है।

उदाहरण के लिए, दिल्ली में निशीथ पूजा का समय लगभग **रात 11:57 बजे से 12:43 बजे** तक बताया गया है।

नोट: अलग-अलग क्षेत्रों और वैष्णव परंपराओं में जन्माष्टमी की तिथि को लेकर थोड़ा अंतर हो सकता है। व्रत और पूजा के लिए अपने स्थानीय पंचांग या मंदिर की परंपरा को प्राथमिकता देना उचित है।

जन्माष्टमी क्यों मनाई जाती है?

धार्मिक मान्यता के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण का जन्म द्वापर युग में भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मथुरा में हुआ था। उनके माता-पिता **देवकी और वासुदेव** थे।

उस समय मथुरा के राजा कंस के अत्याचार से प्रजा परेशान थी। मान्यता है कि अधर्म का नाश और धर्म की स्थापना करने के लिए भगवान विष्णु ने श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लिया।

भगवान श्रीकृष्ण का जीवन हमें **धर्म, कर्म, सत्य, प्रेम और कर्तव्य** का संदेश देता है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान कृष्ण ने कर्म और धर्म का महत्व समझाया। इसी कारण जन्माष्टमी केवल भगवान के जन्म का उत्सव नहीं, बल्कि उनके जीवन और शिक्षाओं को याद करने का भी अवसर है।

जन्माष्टमी का धार्मिक महत्व

जन्माष्टमी हिंदू धर्म में अत्यंत महत्वपूर्ण पर्व माना जाता है।

इस दिन भक्त श्रद्धा और विश्वास के साथ भगवान श्रीकृष्ण की पूजा करते हैं।

जन्माष्टमी के प्रमुख धार्मिक महत्व इस प्रकार हैं:

- भगवान श्रीकृष्ण के जन्म का उत्सव मनाया जाता है।
- भक्त उपवास रखकर भगवान की आराधना करते हैं।
- मध्यरात्रि में श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप का पूजन किया जाता है।
- घर और मंदिरों में भजन-कीर्तन और संकीर्तन आयोजित किए जाते हैं।
- भगवान कृष्ण को माखन-मिश्री, फल और अन्य प्रसाद अर्पित किए जाते हैं।
- कई स्थानों पर कृष्ण जन्म की झांकी और विशेष धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

जन्माष्टमी 2026 कैसे मनाएं?

जन्माष्टमी के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र पहनें। इसके बाद भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान करके व्रत का संकल्प लिया जाता है।

1. घर की साफ-सफाई करें

जन्माष्टमी से पहले घर के पूजा स्थान की अच्छी तरह सफाई करें। पूजा स्थल को फूलों, दीपक और सुंदर सजावट से सजाया जा सकता है।

2. बाल गोपाल का श्रृंगार करें

भगवान श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप यानी **लड्डू गोपाल** को नए वस्त्र पहनाएं। उन्हें मुकुट, बांसुरी, फूलों की माला और अन्य आभूषणों से सजाया जा सकता है।

3. झूला सजाएं

जन्माष्टमी पर बाल गोपाल के लिए सुंदर पालना या झूला सजाने की परंपरा है। फूलों और रंगीन सजावट से झूले को आकर्षक बनाया जा सकता है।

4. व्रत रखें

कई भक्त जन्माष्टमी पर व्रत रखते हैं। अपनी स्वास्थ्य स्थिति और व्यक्तिगत क्षमता के अनुसार व्रत रखना चाहिए। व्रत के नियम परिवार और परंपरा के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं।

5. भगवान श्रीकृष्ण की पूजा करें

रात में निशीथ काल के आसपास भगवान श्रीकृष्ण की पूजा की जाती है। पूजा में जल, पंचामृत, फूल, फल, तुलसी दल, धूप और दीप आदि का प्रयोग किया जाता है। भगवान का पंचामृत से अभिषेक करके उन्हें नए वस्त्र पहनाए जाते हैं।

6. माखन-मिश्री का भोग लगाएं

भगवान श्रीकृष्ण को माखन और मिश्री विशेष रूप से प्रिय माने जाते हैं। जन्माष्टमी पर माखन-मिश्री के साथ फल और अन्य सात्विक व्यंजन भी भोग में अर्पित किए जा सकते हैं।

7. मध्यरात्रि में जन्मोत्सव मनाएं

रात में भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के समय शंख और घंटियां बजाकर जन्मोत्सव मनाया जाता है। इसके बाद आरती की जाती है और प्रसाद वितरित किया जाता है।

जन्माष्टमी पूजा सामग्री

घर पर जन्माष्टमी पूजा के लिए सामान्य रूप से इन चीजों की आवश्यकता हो सकती है:

- भगवान श्रीकृष्ण या लड्डू गोपाल की प्रतिमा
- नया वस्त्र और मुकुट
- पालना या झूला
- पंचामृत
- दूध, दही और घी
- शहद और गंगाजल
- माखन-मिश्री
- तुलसी दल
- फल और मिठाई
- फूल और माला
- धूप और दीप
- रोली और अक्षत

- पूजा की थाली

पूजा सामग्री की सूची क्षेत्रीय परंपरा के अनुसार अलग हो सकती है।

जन्माष्टमी पर दही हांडी का आयोजन

जन्माष्टमी के अगले दिन कई स्थानों पर **दही हांडी** का आयोजन किया जाता है। इसमें ऊंचाई पर मटकी लटकाई जाती है और युवाओं की टोलियां मानव पिरामिड बनाकर मटकी फोड़ती हैं।

यह परंपरा भगवान कृष्ण की बाल लीलाओं और माखन के प्रति उनके प्रेम से जुड़ी मानी जाती है। 2026 में दही हांडी **5 सितंबर** को पड़ती है।

मथुरा और वृंदावन में जन्माष्टमी

जन्माष्टमी के अवसर पर **मथुरा और वृंदावन** में विशेष धार्मिक उत्सव होते हैं। मंदिरों को सजाया जाता है और बड़ी संख्या में श्रद्धालु भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन के लिए पहुंचते हैं।

मंदिरों में भजन-कीर्तन, झांकियां, अभिषेक और मध्यरात्रि जन्मोत्सव विशेष आकर्षण का केंद्र होते हैं।

जन्माष्टमी हमें क्या संदेश देती है?

श्रीकृष्ण का जीवन हमें कई महत्वपूर्ण संदेश देता है। भगवान कृष्ण ने सिखाया कि मनुष्य को अपने कर्तव्य का पालन करते हुए परिणाम की चिंता से मुक्त होकर कर्म करना चाहिए।

जन्माष्टमी हमें **धर्म के मार्ग पर चलने, अन्याय का विरोध करने, प्रेम और करुणा रखने तथा अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से निभाने** की प्रेरणा देती है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी 2026 का पर्व 4 सितंबर, शुक्रवार को श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया जाएगा। यह दिन भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव के साथ-साथ उनके आदर्शों और शिक्षाओं को अपने जीवन में अपनाने का अवसर भी है।

इस जन्माष्टमी पर भगवान श्रीकृष्ण की पूजा, व्रत, भजन-कीर्तन और मध्यरात्रि जन्मोत्सव के साथ अपने परिवार और समाज में प्रेम, शांति और सद्भाव का संदेश फैलाएं।

RELATED ARTICLE

कृष्ण जन्माष्टमी व्रत कथा

श्री कृष्ण चालीसा

THANKS FOR READING

READ MORE RELIGIOUS CONTENT ON

vedicprayers.com

VEDIC PRAYERS